[A-17] Seat No: _____ No. of printed pages: 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A. (Prev.) (External) Examination
Monday, 16th April 2018
10.00 am - 1.00 pm
HIN - 401 : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

कुल गुण : १००

प्र.१ कबीर की समाज-दर्शन पर विचार कीजिए । (२०)

अथवा

प्र.१ जायसी के 'पद्मावत' के काव्यरूप और भाषापक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए । (२०)

प्र.२ 'भ्रमरगीत' का अर्थ स्पष्ट करते हुए सूरदास के 'भ्रमरगीत' की विशेषताएँ बताइए । (२०)

अथवा

प्र.२ 'रामचरित मानस' में 'अयोध्याकांड' का महत्त्व समझाइए । (२०)

प्र.३ धनानंद के वियोग पक्ष की विशेषता पर प्रकाश डालिए । (२०)

अथवा

प्र.३ 'मुक्तक काव्य' का अर्थ समझाते हुए उसकी दृष्टि से 'बिहारी सतसई' पर विचार कीजिए । (२०)

प्र.४ टिप्पणी लिखिए । (२X१०)

(१) नागमती वियोग-खण्ड में प्रकृति वर्णन (१०)

अथवा

(१) सूरदास की गीति योजना

(२) रामचरित मानस (१०)

अथवा

(२) धनानंद का भाषा सौंदर्य

प्र.५ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए- (२०)

(क) कबीर गुर गरवा मिल्या, रति गया आटैं लूँण ।
जाति पाँति कुल सब मिटै, नांव धरोगे कौण ।
जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध ।
अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पड़ंत ।

अथवा

(क) धनआनंद जीवनमूल सुजान की कौंधन हूँ न कहूँ दरसैं ।
सु न जानियै घौं कित छाय रहे दृग-चातिक-प्रान तपे तरसैं ।
बिन पावस तौ, इन प्यावस हो न, सु क्यौं करि ये अब सो परसैं ।
बदरा बरसैं रितु मैं घिरि कै नित ही अँखियाँ उघरी बरसैं ।

(ख) कोटि मनोज लजावनिहारे । सुमुखि कहहु को आहिं तिहारे ।।
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची सिय मन महुँ मुसुकानी ।।
तिन्हहि बिलोकि बिलोकति घरनी । दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी ।।
सकुचि सप्रेम बाल मृग नयनी । बोली मधुर बचन पिकबयनी ।।
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ।।
बहुरि बदनु बिधु अंचल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ।।
खंजन मंजु तिरीछे नयनानि । निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि ।।

अथवा

(ख) बर जीते सर मैन के, ऐसे देखे मैं न ।
हरिनी के नैनानु तैं, हरि नीके ए नैन ।।
छुटी न सिसुता की झलक, झलक्यौ जोबनु अंग ।
दीपति देह दुहून मिलि, दिपति ताफता-रंग ।।